मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम : सनातन, संस्कार एवं सच्चरित्र के अनूठे रूप–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रो0 श्री प्रकाश मिश्र

बी0एड्0 विभाग, एम0एल0के0पी0जी0 कालेज,

बलरामपुर

सार

भारतीय सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला जिन शाश्वत एवं सार्वकालिक मूल्यों पर स्थापित है, उनका सर्वाधिक सजीव, संतुलित और आदर्श स्वरूप श्रीराम के जीवन एवं चरित्र में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। श्रीराम केवल धार्मिक श्रद्धा के केंद्रबिंदु नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय सनातन परंपरा में नैतिकता, कर्तव्यबोध, करुणा, त्याग, संयम और न्याय के सर्वोच्च मानदंड के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनका व्यक्तित्व मानव जीवन के लिए एक ऐसी आदर्श आचार–संहिता प्रस्तुत करता है, जो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा शासकीय सभी स्तरों पर मार्गदर्शन प्रदान करती है।

यह शोध पत्र श्रीराम के चरित्र में निहित सनातन दर्शन, भारतीय संस्कारों और सच्चरित्र के विविध आयामों का गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार श्रीराम का जीवन आदर्श पुरुष, आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता, आदर्श पति, आदर्श शासक तथा आदर्श मानव के रूप में स्थापित होता है और क्यों ये आदर्श आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने प्राचीन काल में थे। श्रीराम का चरित्र यह दर्शाता है कि धर्म केवल सैद्धांतिक अवधारणा नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन में नैतिक निर्णयों और कर्तव्यनिष्ठ आचरण का मार्ग है।

इस शोध में ग्रंथीय अध्ययन, दार्शनिक विवेचन तथा सामाजिक दृष्टिकोण के माध्यम से श्रीराम के चरित्र का मूल्यांकन किया गया है। साथ ही यह भी विश्लेषित किया गया है कि समकालीन समाज में व्याप्त नैतिक संकट, सामाजिक विघटन और मूल्यहीनता के संदर्भ में श्रीराम के आदर्श किस प्रकार समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। निष्कर्षतः यह अध्ययन प्रतिपादित करता है कि श्रीराम का जीवन और चरित्र न केवल भारतीय संस्कृति की आत्मा है, बल्कि आधुनिक समाज के लिए भी नैतिक, सामाजिक और शैक्षिक मार्गदर्शन का शाश्वत स्रोत है।

मुख्यशब्द–श्रीराम, सनातनधर्म, संस्कार, सच्चरित्र रामायण, नैतिक मूल्य, आदर्श जीवन

भूमिका

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, निरंतर प्रवाहमान और मूल्य–आधारित संस्कृतियों में से एक है। इसकी विशिष्टता इस तथ्य में निहित है कि यह केवल भौतिक प्रगति तक सीमित न रहकर आध्यात्मिक चेतना, नैतिक मूल्यों और मानवीय संस्कारों के संतुलन पर आधारित रही है। भारतीय संस्कृति की इस निरंतरता और जीवंतता का मूल कारण इसके सनातन मूल्य हैं, जो युगों–युगों से पीढ़ी दर पीढ़ी जीवन–पद्धति के रूप में प्रवाहित होते रहे हैं। इन शाश्वत मूल्यों का सर्वाधिक उत्कृष्ट, सजीव और प्रभावशाली प्रतिरूप श्रीराम के जीवन एवं चरित्र में दृष्टिगोचर होता है।

रामायण केवल एक धार्मिक या पौराणिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानव जीवन के लिए एक व्यापक नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मार्गदर्शिका है। यह ग्रंथ व्यक्ति के आचरण, कर्तव्यबोध, पारिवारिक उत्तरदायित्व, सामाजिक समरसता और शासकीय नैतिकता के आदर्श प्रतिमान प्रस्तुत करता है। श्रीराम का जीवन इस दृष्टि से विशेष महत्व रखता है कि उन्होंने आदर्शों को केवल

उपदेश के रूप में नहीं, बल्कि अपने व्यवहार और निर्णयों में पूर्णतः आत्मसात किया।

श्रीराम को "मर्यादा पुरुषोत्तम" कहा गया है, क्योंकि उन्होंने जीवन की प्रत्येक परिस्थितिकृचाहे वह सुखद हो या कष्टदायककृमें मर्यादा, संयम और धर्म का पालन किया। उनका चरित्र शक्ति, सत्ता और वैभव के प्रदर्शन से नहीं, बल्कि त्याग, कर्तव्यनिष्ठा, आत्मसंयम और नैतिक दृढ़ता से महान बनता है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सच्चा नेतृत्व और महानता बाह्य वैभव में नहीं, बल्कि आंतरिक नैतिक बल में निहित होती है।

वर्तमान समय में जब समाज नैतिक संकट, पारिवारिक विघटन, स्वार्थपरता, असहिष्णुता और मूल्यहीनता जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब श्रीराम के आदर्शों का अध्ययन और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। श्रीराम का जीवन व्यक्ति, समाज और शासनकृ तीनों स्तरों पर संतुलन, न्याय और कर्तव्य का मार्ग प्रशस्त करता है। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध पत्र श्रीराम के सनातन स्वरूप, भारतीय संस्कारों और सच्चरित्र का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए यह प्रतिपादित करने का प्रयास करता है कि उनके आदर्श आज भी समकालीन समाज के लिए नैतिक दिशा–सूचक और प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

सनातन धर्म की अवधारणा और श्रीराम

सनातन धर्म भारतीय सभ्यता का मूल आधार है, जिसका शाब्दिक अर्थ है जो सदा से है और सदा रहेगा। यह किसी एक संप्रदाय, कालखंड या पूजा–पद्धति तक सीमित न होकर एक व्यापक जीवन–दर्शन है, जिसमें सत्य, धर्म, कर्तव्य, करुणा, अहिंसा, संयम और लोककल्याण जैसे शाश्वत मूल्य अंतर्निहित हैं। सनातन धर्म का उद्देश्य केवल आध्यात्मिक मुक्ति नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और राज्य तीनों स्तरों पर संतुलन और नैतिकता की स्थापना करना है। इस दृष्टि से श्रीराम को सनातन धर्म का साकार एवं आदर्श प्रतीक माना जाता है।

वाल्मीकि रामायण में श्रीराम को आदर्श मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे ईश्वर अवतार होते हुए भी अपने जीवन में मानवोचित संघर्ष, पीड़ा और कर्तव्यबोध को स्वीकार करते हैं। रामायण में श्रीराम का चरित्र यह दर्शाता है कि धर्म कोई अमूर्त सिद्धांत नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन में अपनाया जाने वाला नैतिक मार्ग है। पिता की आज्ञा पालन हेतु राज्य त्याग, वनवास स्वीकार करना, गुरु, माता–पिता और समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभानाकृये सभी प्रसंग सनातन धर्म के कर्तव्य–सिद्धांत को सुदृढ़ करते हैं।

वहीं श्रीरामचरितमानस में तुलसीदास ने श्रीराम के चरित्र को लोकधर्मी, भक्तिमय और नैतिक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। रामचरितमानस में श्रीराम केवल राजकुमार या योद्धा नहीं, बल्कि करुणा, दया, समभाव और लोकमंगल के प्रतीक हैं। तुलसीदास के अनुसार राम वह तत्व हैं जिनमें धर्म और करुणा का पूर्ण समन्वय है– **"रामहि केवल प्रेमु पियारा"** यह पंक्ति श्रीराम के उस सनातन स्वरूप को उद्घाटित करती है, जिसमें प्रेम, भक्ति और नैतिकता का अद्वितीय संगम दिखाई देता है।

सनातन धर्म में धर्म का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व है। श्रीराम इस धर्म की रक्षा के लिए व्यक्तिगत सुख, पत्नी–वियोग और कष्ट को भी सहर्ष स्वीकार करते हैं। वाल्मीकि रामायण में उनका न्यायबोध, तथा रामचरितमानस में उनका करुणामय लोकनायक स्वरूपकृदोनों मिलकर सनातन धर्म की संपूर्ण अवधारणा को स्पष्ट करते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि श्रीराम का जीवन सनातन धर्म की जीवंत व्याख्या है। रामायण और रामचरितमानसकृदोनों ग्रंथ श्रीराम को ऐसे आदर्श के रूप में स्थापित करते हैं, जो धर्म, नैतिकता और मानवता को व्यवहारिक जीवन में उतारने की प्रेरणा देते हैं। इसलिए श्रीराम न केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं, बल्कि सनातन धर्म के शाश्वत मूल्यों के सजीव प्रतिनिधि भी हैं।

श्रीराम के जीवन में संस्कारों की भूमिका

भारतीय संस्कृति में संस्कार केवल सामाजिक परंपराएँ नहीं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक, मानसिक और आध्यात्मिक निर्माण की आधारशिला माने जाते हैं।

संस्कार ही मानव को पशुता से मानवता और मानवता से आदर्शता की ओर ले जाते हैं। श्रीराम का जीवन इस तथ्य का सशक्त प्रमाण है कि श्रेष्ठ संस्कार किसी भी व्यक्ति को मर्यादा, कर्तव्य और करुणा का प्रतीक बना सकते हैं। श्रीराम के चरित्र में संस्कार पारिवारिक, सामाजिक और शासकीय तीनों स्तरों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं।

पारिवारिक संस्कार

श्रीराम के जीवन में पारिवारिक संस्कारों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। पिता दशरथ के प्रति उनकी आज्ञाकारिता भारतीय पुत्र धर्म का सर्वोच्च आदर्श प्रस्तुत करती है। पिता की आज्ञा के पालन हेतु राज्य, ऐश्वर्य और सुख–सुविधाओं का त्याग कर वनवास स्वीकार करना यह दर्शाता है कि उनके लिए पारिवारिक वचन और मर्यादा व्यक्तिगत सुख से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण थे। यह संस्कार भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में अनुशासन, श्रद्धा और कर्तव्यबोध की भावना को सुदृढ़ करता है।

माता कौशल्या, कैकेयी और सुमित्राकृतीनों के प्रति श्रीराम का समान सम्मान यह सिद्ध करता है कि उनके संस्कारों में नारी के प्रति आदर और समभाव की भावना अंतर्निहित थी। भ्रातृ संबंधों में श्रीराम और भरत का प्रेम, त्याग और पारस्परिक सम्मान भारतीय परिवार व्यवस्था में आदर्श भ्रातृत्व का उदाहरण प्रस्तुत करता है। भरत द्वारा राज्य अस्वीकार कर श्रीराम की चरण पादुका को सिंहासन पर स्थापित करना, और श्रीराम का भरत के प्रति स्नेहकृदोनों ही उच्चकोटि के पारिवारिक संस्कारों के द्योतक हैं।

वैवाहिक और नारी–सम्मान के संस्कार

श्रीराम का वैवाहिक जीवन नारी–सम्मान, एकनिष्ठता और मर्यादा का आदर्श प्रस्तुत करता है। माता सीता के प्रति उनका आचरण यह दर्शाता है कि पत्नी केवल जीवन–संगिनी ही नहीं, बल्कि सम्मान और समानता की अधिकारी है। वनवास के कठिन समय में भी श्रीराम का सीता के प्रति संरक्षण और सम्मान उनके सुसंस्कारित व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करता है।

सामाजिक संस्कार

श्रीराम के सामाजिक संस्कार अत्यंत समावेशी और मानवीय थे। उन्होंने निषादराज गुह, शबरी और केवट जैसे समाज के वंचित और उपेक्षित वर्गों के लोगों को समान आदर प्रदान किया। यह आचरण यह सिद्ध करता है कि उनके लिए मानव की गरिमा जाति, वर्ग या सामाजिक स्थिति से ऊपर थी। यह दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को साकार करता है।

शासकीय और नागरिक संस्कार

राजा के रूप में श्रीराम का आचरण आदर्श शासन प्रणाली का उदाहरण है, जिसे 'रामराज्य' के रूप में जाना जाता है। रामराज्य का तात्पर्य केवल सुशासन नहीं, बल्कि ऐसा राज्य है जहाँ न्याय, नैतिकता, समानता और लोककल्याण सर्वोपरि हों। श्रीराम के लिए शासन अधिकार नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम था। उनके निर्णयों में लोकहित को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था, चाहे इसके लिए उन्हें व्यक्तिगत कष्ट ही क्यों न सहना पड़े।

संस्कार और व्यक्तित्व निर्माण

श्रीराम के जीवन से यह स्पष्ट होता है कि संस्कार व्यक्ति के चरित्र को सुदृढ़, संतुलित और नैतिक बनाते हैं। उनके संस्कारों ने उन्हें संयमी, करुणाशील, न्यायप्रिय और कर्तव्यनिष्ठ बनाया। यही कारण है कि वे केवल एक ऐतिहासिक या पौराणिक चरित्र नहीं, बल्कि भारतीय जीवन–मूल्यों के शाश्वत प्रतीक बन गए।

श्रीराम का सच्चरित्र–नैतिक मूल्यों का प्रतिमान

भारतीय नैतिक दर्शन में सच्चरित्र का तात्पर्य केवल बाह्य सदाचार से नहीं, बल्कि आंतरिक पवित्रता, सत्यनिष्ठा, कर्तव्यबोध, करुणा, संयम तथा न्यायपूर्ण आचरण से है। सच्चरित्र वह जीवन–पद्धति है जिसमें विचार, वाणी और कर्म तीनों में सामंजस्य हो। श्रीराम का संपूर्ण जीवन इस सच्चरित्र का आदर्श प्रतिरूप है। वाल्मीकि रामायण और गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानसकृदोनों ही ग्रंथ श्रीराम को ऐसे आदर्श मानव के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिनका आचरण कठिनतम परिस्थितियों में भी धर्म और नैतिक मूल्यों से विचलित नहीं होता।

सत्य और वचनपालन

श्रीराम के सच्चरित्र का मूलाधार सत्यनिष्ठा और वचनपालन है। उन्होंने जीवन में सत्य को केवल नैतिक सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि व्यवहारिक आचरण के रूप में अपनाया। पिता दशरथ द्वारा दिए गए वचन की रक्षा हेतु उन्होंने राज्याभिषेक जैसे सर्वोच्च सुख का त्याग कर वनवास स्वीकार किया। यह त्याग किसी दबाव या विवशता का परिणाम नहीं था, बल्कि सत्य और पितृआज्ञा के प्रति उनकी आस्था का परिचायक था। वाल्मीकि रामायण में श्रीराम का यह कथन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है "पितुर्वचनमादिष्टं नातिक्रमितुमर्हसि।" (अर्थ पिता के वचन का उल्लंघन करना मेरे लिए संभव नहीं है।) रामचरितमानस में तुलसीदास इस सत्यनिष्ठा को रघुवंश की परंपरा से जोड़ते हुए कहते हैं "रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाए पर वचन न जाई।" यह पंक्ति श्रीराम के सच्चरित्र को व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक नैतिक परंपरा के रूप में स्थापित करती है।

कर्तव्यबोध और त्याग

श्रीराम का जीवन कर्तव्य और त्याग का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने प्रत्येक भूमिका पुत्र, भ्राता, पति और राजा में कर्तव्य को सर्वोच्च स्थान दिया। वनवास के दौरान उन्होंने राजसी वैभव, सुख–सुविधाओं और सामाजिक प्रतिष्ठा का पूर्णतः परित्याग किया, किंतु कभी भी अपने दायित्वों से विमुख नहीं हुए। वाल्मीकि रामायण में धर्म को जीवन का आधार मानते हुए कहा गया है "धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।" (अर्थ– धर्म का नाश करने वाला स्वयं नष्ट हो जाता है और धर्म की रक्षा करने वाला सुरक्षित रहता है।)

श्रीराम के जीवन में यह सिद्धांत प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है। उनका त्याग यह संदेश देता है कि व्यक्तिगत सुख से ऊपर उठकर सामाजिक और नैतिक कर्तव्यों का पालन ही सच्चरित्र का वास्तविक स्वरूप है।

करुणा और मानवता

श्रीराम का सच्चरित्र करुणा और मानवता से परिपूर्ण है। उन्होंने जाति, वर्ग और सामाजिक स्थिति से ऊपर उठकर प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान दिया। शबरी, निषादराज गुह, केवट और वानर–भालुओं के प्रति उनका व्यवहार यह प्रमाणित करता है कि श्रीराम के लिए मानव मूल्य सामाजिक भेदभाव से अधिक महत्त्वपूर्ण थे। रामचरितमानस में श्रीराम के इस करुणामय स्वरूप को इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है "रामहि केवल प्रेमु पियारा।" अर्थात् श्रीराम के लिए प्रेम और करुणा ही सर्वोच्च मूल्य हैं।

संयम और आत्मनियंत्रण

असीम शक्ति और सामर्थ्य के स्वामी होने के बावजूद श्रीराम ने जीवन में संयम और आत्मनियंत्रण का पालन किया। रावण जैसे शक्तिशाली शत्रु से युद्ध करते समय भी उन्होंने धर्मयुद्ध की मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। क्रोध, प्रतिशोध और अहंकार पर नियंत्रण रखना उनके सच्चरित्र की महत्वपूर्ण विशेषता है। वाल्मीकि रामायण में श्रीराम का आचरण यह दर्शाता है कि वास्तविक शक्ति आत्मसंयम में निहित होती है। उनका जीवन यह संदेश देता है कि नैतिक सीमाओं में रहकर ही शक्ति का प्रयोग करना सच्चे नेतृत्व का गुण है।

न्याय और लोकमर्यादा

राजा के रूप में श्रीराम का न्यायबोध उनके सच्चरित्र का केंद्रीय आयाम है। उन्होंने व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर उठकर लोकमर्यादा और न्याय को प्राथमिकता दी। रामराज्य की अवधारणा आदर्श शासन का प्रतीक है, जहाँ न्याय, समानता और लोककल्याण सर्वोपरि थे। रामचरितमानस में रामराज्य का वर्णन इस प्रकार किया गया है "दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज नहिं काहुहि ब्यापा।" यह पंक्ति श्रीराम के न्यायपूर्ण और नैतिक शासन की सार्वकालिक प्रासंगिकता को रेखांकित करती है।

सच्चरित्र और आदर्श मानव

श्रीराम का सच्चरित्र यह सिद्ध करता है कि नैतिकता केवल उपदेश का विषय नहीं, बल्कि आचरण की कसौटी है। उनके जीवन के प्रत्येक निर्णय में सत्य, धर्म, करुणा और न्याय का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। यही कारण है कि श्रीराम केवल एक धार्मिक चरित्र नहीं, बल्कि सार्वकालिक नैतिक मूल्यों के प्रतीक और आदर्श मानव के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आधुनिक

समाज के नैतिक संकटों के समाधान में श्रीराम का सच्चरित्र आज भी उतना ही प्रासंगिक और मार्गदर्शक है जितना प्राचीन काल में था।

श्रीराम और शिक्षा में मूल्यबोध

आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्यतः ज्ञान, सूचना, तकनीकी दक्षता और व्यावसायिक कौशल के विकास पर केंद्रित होती जा रही है। यद्यपि यह दृष्टिकोण आर्थिक एवं वैज्ञानिक प्रगति के लिए आवश्यक है, किंतु इसके परिणामस्वरूप शिक्षा में मूल्यबोध का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अनुशासनहीनता, नैतिक विचलन, सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी तथा संवेदनशीलता का क्षरण इसी मूल्यहीन शिक्षा व्यवस्था के दुष्परिणाम हैं। ऐसे परिदृश्य में श्रीराम का जीवन और चरित्र मूल्य–आधारित शिक्षा का एक सशक्त एवं व्यवहारिक आदर्श प्रस्तुत करता है।

श्रीराम का जीवन सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपालन, अनुशासन, सहिष्णुता और करुणा जैसे मूल्यों से परिपूर्ण है। उन्होंने शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का माध्यम माना। गुरु वशिष्ठ और विश्वामित्र के सान्निध्य में प्राप्त शिक्षा ने श्रीराम के व्यक्तित्व में ज्ञान के साथ–साथ विवेक, संयम और नैतिकता का समावेश किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्या अर्जन नहीं, बल्कि श्रेष्ठ मानव का निर्माण रहा है।

यदि श्रीराम के चरित्र को आधुनिक शिक्षा पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा, नागरिक शास्त्र और जीवन कौशल के रूप में समाहित किया जाए, तो विद्यार्थियों में सत्य, अनुशासन, कर्तव्यबोध, आत्मसंयम और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का स्वाभाविक विकास संभव है। श्रीराम का आदर्श नेतृत्व, न्यायप्रियता और लोककल्याण की भावना विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देती है।

इस प्रकार श्रीराम आधारित मूल्यबोध शिक्षा न केवल विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में सहायक हो सकती है, बल्कि समाज में नैतिक चेतना, सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

समकालीन समाज में श्रीराम की प्रासंगिकता

इक्कीसवीं सदी का समकालीन समाज तीव्र परिवर्तन, भौतिकवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव में गहन नैतिक संकट से गुजर रहा है। पारिवारिक विघटन, सामाजिक असहिष्णुता, हिंसा, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता तथा मानवीय संवेदनाओं का क्षरण आज की प्रमुख सामाजिक समस्याएँ बन चुकी हैं। ऐसे चुनौतीपूर्ण परिदृश्य में श्रीराम का जीवन और आदर्श संतुलन, सहिष्णुता, कर्तव्य और नैतिकता का स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

श्रीराम का व्यक्तित्व यह सिखाता है कि जीवन में संतुलन बनाए रखना ही सामाजिक स्थायित्व का आधार है। उन्होंने व्यक्तिगत भावनाओं, पारिवारिक दायित्वों और सामाजिक कर्तव्यों के मध्य अद्‌भुत समन्वय स्थापित किया। आज जब व्यक्ति अपने अधिकारों पर तो बल देता है, किंतु कर्तव्यों की उपेक्षा करता है, तब श्रीराम का कर्तव्यबोध समाज के लिए अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करता है।

समकालीन समाज में बढ़ती असहिष्णुता और वैचारिक टकराव के संदर्भ में श्रीराम की सहिष्णुता विशेष रूप से प्रासंगिक है। उन्होंने विरोध, अपमान और संकट के क्षणों में भी संयम, संवाद और धर्म का मार्ग नहीं छोड़ा। यह दृष्टिकोण आज सामाजिक सौहार्द, सांस्कृतिक सहअस्तित्व और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

श्रीराम का आदर्श नेतृत्व राजनीतिक, सामाजिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। राजा के रूप में उन्होंने सत्ता को सेवा और लोककल्याण का माध्यम माना, न कि व्यक्तिगत स्वार्थ या दमन का साधन। रामराज्य की अवधारणा न्याय, समानता, उत्तरदायित्व और लोकहित पर आधारित शासन व्यवस्था का प्रतीक है। आज के शासन तंत्र में यदि श्रीराम के नेतृत्व मूल्यों, न्यायप्रियता, पारदर्शिता, करुणा और उत्तरदायित्व को आत्मसात किया जाए, तो प्रशासन अधिक मानवीय और प्रभावी बन सकता है।

इस प्रकार श्रीराम केवल प्राचीन काल के आदर्श पुरुष नहीं हैं, बल्कि समकालीन समाज के नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक संकटों के समाधान हेतु एक सार्वकालिक मार्गदर्शक हैं। उनके जीवन मूल्य आज भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के संतुलित एवं सुदृढ़ विकास के लिए उतने ही प्रासंगिक हैं जितने प्राचीन युग में थे।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि श्रीराम का जीवन, चरित्र और आचरण भारतीय सनातन परंपरा में निहित नैतिक मूल्यों का सर्वाधिक परिपूर्ण और व्यावहारिक प्रतिमान है। श्रीराम केवल एक पौराणिक या धार्मिक व्यक्तित्व नहीं हैं, बल्कि वे सत्य, धर्म, कर्तव्य, करुणा, संयम और न्याय जैसे सार्वकालिक मानवीय मूल्यों के सजीव प्रतीक हैं। वाल्मीकि रामायण और श्रीरामचरितमानसकृदोनों ग्रंथों के अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि श्रीराम का सच्चरित्र जीवन की प्रत्येक भूमिका पुत्र, भ्राता, पति, शासक और नागरिककृमें आदर्श आचरण की कसौटी प्रस्तुत करता है।

अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिक समाज जिन नैतिक, सामाजिक और शैक्षिक संकटों से जूझ रहा है जैसे मूल्यहीनता, पारिवारिक विघटन, असहिष्णुता, हिंसा और स्वार्थपरता उनके समाधान श्रीराम के जीवन मूल्यों में निहित हैं। शिक्षा, शासन और सामाजिक जीवन में यदि श्रीराम के आदर्शों को व्यवहारिक रूप से अपनाया जाए, तो एक संतुलित, नैतिक और उत्तरदायी समाज की स्थापना संभव है। इस प्रकार श्रीराम का सच्चरित्र न केवल अतीत की विरासत है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक प्रभावी नैतिक मार्गदर्शक है।

सुझाव

1. **शिक्षा में समावेशन**– विद्यालयी और उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में श्रीराम के जीवन और मूल्यों को नैतिक शिक्षा, नागरिक शास्त्र और जीवन कौशल शिक्षा के अंतर्गत समाहित किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण को बल मिले।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण**– शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों (B.Ed./M.Ed.) में मूल्य–आधारित शिक्षण पद्धतियों के अंतर्गत रामायण और रामचरितमानस के चयनित प्रसंगों का अध्ययन कराया जाना चाहिए।
3. **प्रशासनिक और नेतृत्व प्रशिक्षण–** प्रशासनिक सेवाओं और नेतृत्व विकास कार्यक्रमों में श्रीराम के आदर्श नेतृत्व, न्यायप्रियता और लोककल्याण की अवधारणा को प्रशिक्षण का आधार बनाया जा सकता है।
4. **सामाजिक जागरूकता–** मीडिया, साहित्य और सामाजिक संगठनों के माध्यम से श्रीराम के जीवन मूल्यों का प्रचार–प्रसार कर समाज में नैतिक चेतना और सामाजिक समरसता को सुदृढ़ किया जाए।
5. **अनुसंधान विस्तार**– भविष्य में श्रीराम के चरित्र पर अंतर्विषयक (Interdisciplinary) शोध जैसे शिक्षा, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और लोकप्रशासन के संदर्भ में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

इन सुझावों के माध्यम से श्रीराम के सच्चरित्र और नैतिक मूल्यों को समकालीन समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है। यदि शिक्षा व्यवस्था में मूल्यबोध को केंद्र में रखते हुए श्रीराम के जीवन आदर्शों को व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत किया जाए, तो भावी पीढ़ी में नैतिक चेतना, कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास संभव है। इसी प्रकार शासन, प्रशासन और नेतृत्व के क्षेत्रों में श्रीराम के न्यायप्रिय, सेवा–प्रधान और लोककल्याणकारी दृष्टिकोण को अपनाने से सत्ता के दुरुपयोग, भ्रष्टाचार और असमानता जैसी समस्याओं पर अंकुश लगाया जा सकता है। सामाजिक जीवन में श्रीराम की करुणा, सहिष्णुता और समरसता की भावना पारिवारिक विघटन, वैचारिक टकराव और असहिष्णुता को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। इस प्रकार श्रीराम का सच्चरित्र केवल धार्मिक आस्था तक

सीमित न रहकर एक समग्र सामाजिक–नैतिक दर्शन के रूप में स्थापित होता है, जो वर्तमान समाज की चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करते हुए मानवीय मूल्यों से युक्त, संतुलित और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सन्दर्भ :

1. वाल्मीकि (सम्पा.). वाल्मीकि रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर, (अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, युद्धकाण्ड श्रीराम के चरित्र व नैतिक आदर्शों हेतु)
2. तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, (बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, उत्तरकाण्ड–आदर्श चरित्र, मर्यादा व लोककल्याण)
3. तुलसीदास. विनय पत्रिका, गीताप्रेस, गोरखपुर, (भक्ति, विनय और नैतिक चेतना के संदर्भ में)
4. शिवमंगल प्रसाद पाण्डेय (2015), रामायण और भारतीय संस्कृति, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
5. हजारीप्रसाद द्विवेदी (2007), भारतीय संस्कृति के चार अध्याय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. रामधारी सिंह 'दिनकर' (2011), संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. सुरेन्द्रनाथ दासगुप्ता (2008), भारतीय दर्शन का इतिहास (खंड–1), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
8. डॉ. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (2010). भारतीय दर्शन, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।
9. गीताप्रेस (सम्पा.). कल्याण विशेषांक रामांक, गोरखपुर। (श्रीराम के जीवन, आदर्श व सामाजिक प्रासंगिकता पर लेख)
10. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र (2012), हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
11. शर्मा, रामस्वरूप (2016). रामायण, नैतिक और सामाजिक मूल्य, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
12. शास्त्री, उदयवीर (2018), भारतीय आदर्श नायक परंपरा में श्रीराम, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।